IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, 2023

सूफी मत और वेदान्त

डॉ. शिवकांता रामकिसन सुरकुटे
हिंदी विभाग
दयानंद कला महाविद्याल लातूर.

कहा जाता है कि हजरत मुहम्मद के उपदेशों के दो पक्ष थे- एक बुध्दि पक्ष और दुसरा हदयपक्ष। बुध्दि पक्ष की अभिव्यक्ति कुरान में हुई हैं किन्तु उसका हदयपक्ष अछूता रहा। आगे चलकर उलेमाल्लों ने कुरान के उसी बुध्दि पक्ष का उपदेश दिया। हदयपक्ष को त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत करनेवाले, सुफ़ी रहस्यवादियों ने अपनाया। हिजरी सन की दूसरी शताब्दी से ये सूफ़ी रहस्यवादियों ने अपनाया। हिजरी सन की दूसरी शताब्दी से ये सूफ़ी नाम से प्रसिध्द हुए। यह एक संत सम्प्रदाय था, जिसमें सरलता, सादगी, सन्यास, साधना एवं पतिव्रता को विशेष महत्व दिया जाता था। इस प्रकार इस्लाम के रहस्यवादी सूफ़ी कहलाये और उसका दर्शन 'तसव्वुफ'१ किन्तु प्रारंम्भ में इस्लाम में सूफी-मत कोई ऐसा सुसंगठित सम्प्रदाय नहीं था, जिसके निर्दिष्ट सिध्दान्त हों। साधक अपनी व्यक्तिगत साधना में ही तल्लीन रहा करते थे और त्याग एंव तपस्या को महत्व देते थे, किन्तु आगे चलकर अनके सिध्दान्त, मन और सम्प्रदाय बन गए। 'सूफ़ी' शब्द का व्यवहार पहले-पहल कब हुआ ? यह बताना बहुत कठिन है, किन्तु कुशेरी का मत है कि ईसा की ९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इसका प्रयोग होता था। 'नफहात-उलउन्स' में जामी ने कहा है "कि सर्व प्रथम आठवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस शब्द को अपने नाम के साथ जोड़ने वाला कूफा का अबूहाशिम था"२

"सन ८१४ इ. में सूफ़िया शब्द सिकन्दरिया के एक साधारण से विद्रोह के सम्बन्ध में प्रयुक्त हुआ था किन्तु आठवीं शताब्दी के अन्त में और नवीं शताब्दी के प्रारम्भ होने के पचास वर्ष अन्दर ही यह मत सारे इराक में फैल गया और सन ८३४ में केवल बगदाद इसका केंन्द्र बन गया। "३ धीरे-धीरे इसका प्रसार होता गया और सूफ़ी शब्द सम्पूर्ण इराक के रहस्यवादियों के लिए प्रयुक्त होने लगा। पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि सूफ़ी मत पर नास्तीक, मानी और नव अफलातूनी मतों का प्रभाव पड़ा है और बाद के तासव्युफ अथवा सुफ़ी मत पर भारतीय वेदान्त और बौध्द धर्म का। परन्तु वेदान्त औ तसव्वुफ का स्वतंत्र अध्ययन करनेवाले विद्वान इस बात को मानते है कि 'तसव्युफ वेदान्त का मधु रुपान्तर है कुछ और नहीं। ४ सूफ़ियों की दो शाखाएँ थीं। एक का नाम बेशरा-जो कुरान की, प्रत्येक बात को ज्यो की त्यों न मानती थी और दूसरी थी 'बाशरा' जिसके दर्शनिक विचारों का आधार कुरान ही रहा। फिर भी यह कहा जायेगा कि आगे चलकर सूफ़ी मत कुरान के कोड़ में विकसित हुआ। नवीं

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

शताब्दी अब्बाश वंशवाले बादशाहों ने अपनी राजस्थानी, दमिश्क से बगदाद में स्थापित की। इस बादशाहों शासनकाल में भारतीय बौध्द तथा वेदान्तिक विचार धाराओं को प्रश्रय मिलने लगा। इस्लाम का प्रचार होने पर भी ईरान में कुछ ऐसे साधक भी थे, जिनमें दर्शन की जिज्ञासा प्रवृत्ति जागी। अतः तत्कालीन ईरानी, नव अफलातूनी, ईसाई तथा भारतीय विचारधाराओं के समन्वय से सूफ़ी साधकों के अपना एक स्वतंत्र मत स्थापित किया, जो 'सूफ़ीमत' के नाम से प्रसिध्द हुआ। इस मत में बहुत-सी ऐसी बातों का समावेश भी हुआ, जो इस्लाम की विचार धारा के विपरीत था।

अरबों के सिन्ध पर अधिकार कर लेने के पश्चात मुलतान सव्युफ का केन्द्र बन गया सिध्द के मुसलमान लोग मक्का जाने लगे और भारत और अरब के सम्बन्धों में घनिष्टता होती गयी इस प्रकार सूफ़ी भारतीय वेदान्त से सीधे प्रभावित होने लगे"। "भारत में सूफ़ी सम्प्रदाय का स्वागत इसलिए भी विशेष रुप से हुआ कि उसमें वेदान्त की पूरी पृष्ठभूमि है और उपने मूलरूप में सूफि सम्प्रदाय वेदान्त का रुपान्तर मात्र है।"६

ऐतिहासिक जब विश्व की कथा लिखते हुए मानव चिन्तन धारा का अनुसरण करता तो वह भी इनके मत से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। उपनिषदों के रहस्यवाद ही का एक स्वरूप हम फारसियों सूफी धर्म में देखते हैं तो उसी की दूसरी धारा धर्म की रहस्यमयता के प्रसंग में पश्चिम में निओप्लेटोनिकों तथा अलेक्जेंड्रियन किश्चियनों के ज्ञान योग की तरह चल एकहार्ट तथा टॉलर सरी रहस्यवादियों के जीवन में प्रवाहमान देखते हैं और अन्त में किस प्रकार वही प्राचीन प्रवाह १९ सदी के जर्मन रहस्यवादी शौपेन हॉर के दर्शन को प्रेरित कर गया, यह किसको अविदित है। इन प्रमाणों से हम इस तथ्य पर तो पहुँच ही जाते है कि सूफी मत पर वेदान्त का प्रभाव अवश्यपडा था। यह चाहे प्रत्यक्ष पूर्ण समावेश है। और जब सूफ़ी मत भारत भूमि पर आया, तब वह फिर यहीं की वेदान्त सम्बन्धी विचारधारा से प्रभावित हुआ। इस प्रभाव को सुप्रसिध्द लेखक सैयद सुलेमान नदवी ने भी स्वीकार किया है कि "इसमें तो कोई संदेह नहीं कि मुसलमान सूफियों पर भारत में आने के बाद हिन्दू वेदान्तियों का प्रभाव पड़ा है। ७ डॉ. राधाकृष्णन का भी यही मत है कि "नवप्लेटोवाद तथा हिन्दू एव बौध्द विचारधाराओं के प्रभाव के कारण ये लोग इस्लाम की भी रहस्यवादी व्याख्या प्रस्तुत करने की और अग्रसर हुए होंगे"। ८

हिन्दू वेदान्त और इस्लामी सूफ़ी मत में बहुत समानता है, इसलिए दारा ने उपनिषदों में अद्वैत की भावना पाई और हिन्दू और इस्लाम रुपी महासागरों के संगम की बात कही। उसने तो यहाँ तक साम्य देखा कि उसे वेदान्त तथा सूफ़ी मत की परिभाषिक शब्दावली के अतिरिक्त और कोई अन्तर ही नहीं जान पड़ा। सुफ़ियों का दावा है कि उनका मत इस्लाम से भी प्राचीन हैं और उसका प्रादुर्भाव ईसा प्रारम्भिक शताब्दियों में ही हो गया था। वे अपने मत को एक सहस्त्र वर्ष प्राचीन मानते हैं। स्पष्ट है कि

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

उस समय इस्लाम का तो प्रादुर्भाव ही नहीं हुआ था। हा भारतीय धर्म प्रचारक अवश्य विदेशों में थे, जिन्होंने उपनिषदों की रहस्यमय शिक्षाओं तथा बौध्दमत के उपदेश दिए थे। ऐतिहासिक आधार पर कहा जाता है कि पैगम्बर के प्रिय शिष्य अली सूफ़ी थे। भारतीय वेदान्त प्रचारकों ने मुहम्मद आविर्भाव से पूर्व ही उपनिषदों की रहस्यमय शिक्षाओं का प्रचार दूर-दूर तक किया था और जो मुसलमान उस और आकृष्ट हुए थे, उन्होंने उन शिक्षाओं को सहर्ष ग्रहण किया और मुहम्मद के नए सिध्दान्तों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि सूफ़ी रहस्यवाद का श्रेय मुहम्मद साहब को न होकर उन सूफ़ियों का ही है, जिन्होंने उपनिषदों के रहस्य को अपनाया था। मुहम्मद साहब के सिध्दान्त तो सूफी मत से नितान्त भिन्न थे। भारतीय प्रेमाभक्ति और सूफियों के प्रेम में कोई अन्तर नहीं जान पड़ता। आगे चलकर जब मुसलमान सलीफाओं ने सूफियों के साथ अमानुषी अत्याचार किए तो कुछ उदार हृदय सूफियों ने समन्वय का मार्ग खोज निकाला था।यद्यपि सूफ़ी मत मुख्य रुप से फारस से ही विकसित हुआ किन्तु भारत के वेदांत तथा प्रेमा भक्ति का उस पर पूरा-पूरा प्रभाव पड़ा। कुछ विद्वानों का तो यहाँ तक कहना है कि भारत की शिक्षा के बिना सूफ़ी मत का अविर्भाव ही नहीं होता और सूफ, सूफ़ी न रहकर कट्टर मुसलमान ही बने रहते। वस्तुतः आठवी-नवीं शताब्दी के अंत तक सूफ़ी मत में प्रेम एवं भक्ति की ही प्रधानता रही। किन्तु इस्लाम की कट्टरता एव अत्याचारों के कारण ११ वीं शताब्दी के पश्चात सूफी धर्म ने सुन्नत और शरीयत से समझौता कर लिया।

संदर्भ :-

१. सूफी मत साधना और साहित्य श्रीराम पूजन तिवारी, पृ. ११९.

२. भक्तिकाव्य की दर्शनिक चेतना डॉ. नारायण प्रसाद वाजपेयी पृ. १२१.

३. वही, पृ. १२२

४. तसब्बुफ अथवा सूफीमत चंद्रवली पाण्डेय. पृ. २३२

५. वही, पृ. २३२

६.हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास डॉ. रामकुमार वर्मा पृ. १९५४

७. भक्तिकाव्य की दर्शनिक चेतना डॉ. नारायणप्रसाद वाजेपयी, पृ. १२४

८. वही.

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 1, 2023**